



NEWSMAKERS



UPSMCA ORGANISES COGEN CONCLAVE ON DEVIATION SETTLEMENT MECHANISM, OPEN ACCESS AND INDUSTRIAL SAFETY

U.P. Sugar Mills Cogen Association organized Cogen Conclave on Deviation Settlement Mechanism (DSM), Open Access and Industrial Safety on 12th June, 2024 (Wednesday) in Lucknow.

Inaugural session started with lamp lighting ceremony and grand welcome extended to the Chief Guest Dr. Ashish Kumar Goyal, Chairman, UPPCL and other distinguished guests by the Association President Shri. Pankaj Rastogi, CEO, Dalmia Sugar.



The conclave was divided into three sessions. First session was based on technical aspects of Deviation Settlement Mechanism. Various issues and information regarding DSM i.e. DSM Regulation comparative, Assessment & impact of DSM regulation, 2024, legal aspects, Practical aspects etc. were discussed by the experts.

Simultaneously, Concepts of Open Access, Case Study on Possibilities were discussed in second session. Detail information regarding open access was shared with the

participants. The third session was based on industrial safety, which is a very important topic in terms of prevention from accidents and people's safety. A question-answers session was also held to resolve the queries of the participants.

During the occasion, select personalities from the industry were commended with 'LIFE TIME ACHIEVEMENT AWARD' & 'OUTSTANDING CONTRIBUTION



AWARD' in recognition of their remarkable work in the field of Co-generation in sugar industry.

INDIA ACHIEVES 12.48 PER CENT ETHANOL BLENDING

The country has achieved about 12.48% ethanol blending as of May end. As per the report obtained from sources, the total ethanol contracted from sugar-based distillery units is around 231 cr litres, and the supplied quantity is around 166 cr litres as of 26th May 2024.

Ethanol contracted from Sugarcane Juice is around 64 cr litres, and ethanol supplied from it is around 56 cr litres. The ethanol contracted from B-Heavy molasses and C Heavy molasses is around 113 cr litres and around 54 cr litres respectively, whereas the supplied quantity from B Heavy molasses and C Heavy molasses is 82 cr litres and 28 cr litres respectively.

In total, from sugar-based and grain-based distillery units, the total ethanol contracted is around 647 cr litres, of which around 328 cr litres have been supplied until the above mentioned period.

Source: chinimandi.com, 3rd June, 2024

NINJACART IMPACT REPORT 2023

Ninjacart, India's leading agri-startup leveraging technology and data to organise the global agriculture ecosystem, has unveiled the findings of its 'NINJACART IMPACT REPORT 2023.

Continued on the next page ...



The report, based on a comprehensive survey conducted among 600 agri citizens nationwide in collaboration with '60 Decibels', provides valuable insights into Ninjacart's positive impact on users' quality of life and their experience with Ninjacart's platform.

The survey reveals a tangible improvement in the economic well-being of Ninjacart users, with 4 out of 5 reporting a better quality of life. Among these users, Ninjacart has improved their quality of life in terms of business growth, reduced stress, increased income, better access to information, and better access to the market.

“This underscores Ninjacart's commitment to fostering a lasting impact within the agricultural sector through advancements in commerce, cutting-edge logistics and fulfillment solutions, and accessible capital options. All of these efforts are aimed at empowering all agri citizens across the value chain—from farmers to traders and retailers,” says a company press release.

Key findings from the survey include:

- Increased Income: 91% of traders, 81% of retailers, and 79% of farmers reported increased income due to business growth.
- First-time Access to Services: 97% of traders, 84% of retailers, and 67% of farmers had no prior access to similar services.
- Trustworthiness: 92% of traders, 88% of retailers, and 87% of farmers found Ninjacart's offerings to be trustworthy.
- Convenience of Selling produce for Farmers: 75% farmers said that selling their produce has become more convenient because of Ninjacart
- Improvement in Ways of Farming: 83% farmers reported improvements in their way of farming. The top improvements include crop diversification and improved use of farm inputs.

Source; ruralvoice.in, 30th May, 2024

SOUTHWEST MONSOON NEARING MAINLAND, REPORTS SKYMET

Skymet's latest report indicates that the onset of the 2024 Southwest Monsoon over the mainland is getting closer. The report highlights that three key parameters—ENSO, the Indian Ocean Dipole (IOD), and the Madden-Julian Oscillation (MJO)—significantly influence seasonal

rainfall throughout the monsoon period.

While ENSO and IOD are relatively static patterns, the transitory MJO pulse can trigger monsoon systems over the Indian seas, enhancing convection and prolonging the monsoon's wet phase.

The strength of the IOD forecast has been adjusted downwards from April to May 2024. Most weather models predict a low to moderately positive IOD during the core monsoon months of July and August, turning nearly neutral by September.

Skymet also noted that El Niño is transitioning towards an ENSO-neutral phase. According to the Climate Prediction Centre (CPC), this transition is expected to occur within the next month, with La Niña potentially developing between June and August 2024 (49% chance) or July and September (69% chance).

Source; Chinimandi.com, 27th May, 2024

Legal Updates

PIL on interest on Delayed Cane Price Payment Rashtriya Kisan Mazdoor Sanghathan vs State of U.P. & others, listed before the Hon'ble Allahabad High Court, Lucknow bench is to be taken on 10th July, 2024.

डेटा बोलता है: देश की मिट्टी की हालत चिंताजनक, सुधार नहीं हुआ तो उत्पादन घटेगा और लागत बढ़ेगी

देश की मिट्टी की वर्तमान हालत बेहद चिंताजनक है। अगर समय रहते सुधार के प्रयास नहीं किए गए, तो कृषि उत्पादन में भारी कमी और लागत में बढ़ोतरी हो सकती है। स्थाई कृषि और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए समेकित नजरिया अपनाना बेहद जरूरी है, ताकि न केवल फसल उत्पादन बढ़ सके बल्कि मानव स्वास्थ्य भी सुरक्षित रह सके।

हाल के वर्षों में राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अंतर्गत मृदा के करोड़ों नमूनों की जांच की गई और इनके परिणाम काफ़ी चिंताजनक देखने में आए हैं। उदाहरण के लिए हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और तमिलनाडु आदि राज्यों में 95-99 प्रतिशत मृदा नमूनों में जैविक कार्बन की मात्रा बहुत कम पाई गई। भारतीय मृदाओं में मोटे तौर पर कम से कम 1.30 प्रतिशत जैव पदार्थ होना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले विभिन्न जैविक स्रोतों, जैव उर्वरकों, फसल विविधीकरण, संरक्षण कृषि, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन और अन्य सस्य विधियों से मृदा में जैव पदार्थ की मात्रा बढ़ाई जानी जरूरी है। इसके साथ ही मृदा से होने वाली जैव पदार्थ की हानि को कम करने का गंभीर प्रयास भी किया जाना चाहिए।

Continued on the next page ...



देश की मिट्टी की उर्वरता काफी चिंताजनक

आईसीएआर के कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, भारत सरकार ने देश की मृदा उर्वरता और स्वास्थ्य के विश्लेषण के लिए साल 2014-15 में राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को आरंभ किया था। इस योजना के अंतर्गत मृदा जांच के दो चक्र पूर्ण हो चुके हैं और इन दो चक्रों में 5.27 करोड़ मृदा नमूनों की जांच की गई। इस जांच में मृदाओं के अंदर उपस्थित जैव कार्बन और खनिज पोषक तत्वों की जांच की गई। इन मृदा नमूनों की जांच से पता चला है कि केवल 15 प्रतिशत मृदाओं में जैव कार्बन की पर्याप्त मात्रा 0.75 प्रतिशत से अधिक थी, जो बेहतर मानी जाती है, जबकि 85 प्रतिशत नमूनों में जैव कार्बन की मात्रा 0.75 प्रतिशत से कम थी, जो मध्यम उर्वरा शक्ति वाली मृदा मानी जाती है। कुछ राज्यों में 95 प्रतिशत से अधिक मृदा नमूनों में जैव कार्बन की पर्याप्त मात्रा मौजूद नहीं थी। जबकि 0.80 प्रतिशत जैविक कार्बन वाली मृदा बेहतर उर्वरा शक्ति वाली मानी जाती है।

देश की मृदाओं की उर्वरता और स्वास्थ्य का स्तर काफी चिंताजनक स्थिति में आ चुका है। देश के कई प्रमुख राज्यों में जैविक कार्बन का स्तर काफी गिर चुका है। वर्तमान में सबसे स्वस्थ और उर्वर शक्ति वाली मृदा सिक्किम में है क्योंकि यहां केवल 3 प्रतिशत मृदा नमूनों में ही 0.75 प्रतिशत से कम जैविक कार्बन मात्रा थी, जबकि हरियाणा और पंजाब में जैविक कार्बन का स्तर 99 प्रतिशत मृदा नमूनों में कम पाया गया है। यानी देश की मृदाओं की उर्वरता और मृदा स्वास्थ्य की स्थिति काफी चिंताजनक है।

देश की मृदा में मुख्य पोषक तत्वों की भारी कमी

देश की मृदा में मुख्य पोषक तत्वों की भी कमी पाई गई है। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की कमी क्रमशः 95 फीसदी, 94 फीसदी, और 48 फीसदी है। जबकि पोषक तत्व उपयोग क्षमता नाइट्रोजन में 30-50 प्रतिशत, फॉस्फोरस में 15-20 प्रतिशत और पोटाशियम में 60-70 प्रतिशत ही है। कृषि में अधिक उर्वरक के उपयोग की तुलना में उर्वरक/पोषक तत्वों की उपयोग क्षमता में सुधार करना बेहद जरूरी है।

सूक्ष्म पोषक तत्व मानव स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं। वे पुरानी बीमारियों और स्टंटिंग को रोकने में योगदान करते हैं, हमारी प्रतिरक्षा और प्रजनन प्रणाली को मजबूत करते हैं और हमारी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को बढ़ाते हैं, जो हमारी मृदा से फसलों में आती हैं। लेकिन आज के वक्त में देश की मृदा में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने लगी है। इसकी कमी से फसलों में कई तरह की समस्याएं आती हैं। मृदा में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी गंभीर है, जिंक की कमी सबसे अधिक पाई गई है।

शेष अगले अंक में.....

Source; kisantak.in, 21st May, 2024

गन्ना प्रजातियों को लाल सड़न से बचाने हेतु उपाय

गन्ना एक ऐसी फसल है जिसमें ग्लूकोज़ फ्रैक्टोज़ होने तथा जलवायु से बहुत ज्यादा उतार चढ़ाव होने के कारण एक भयानक रोग उत्पन्न हो जाता है, जिसे लाल सड़न के नाम से जाना जाता है। इस रोग के आने के बाद गन्ने की प्रजाति

समाप्त हो जाती है जैसे CO- 1148, CoJa - 64, CoSha -767 आदि। इस समय प्रजाति CO -0238 पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, जिन क्षेत्रों में जल भराव नहीं होता है उन क्षेत्रों के लिए यदि उत्तक संवर्धित (tissue culture) पौध का रोपण किया जाये तथा रोपण से पूर्व उक्त खेत को ट्राईकोडर्मा से उपचारित किया जाये तो कुछ समय के लिए बचाया जा सकता है। इसी संदर्भ में एक उचित कदम अन्य प्रजातियों हेतु भी उठाने की आवश्यकता है क्योंकि CO - 0238 के रोग ग्रस्त होने के कारण उन्हीं खेतों में अन्य गन्ना प्रजातियों की बुवाई की जा रही है जबकि उन खेतों में Red Rot (लाल सड़न) के स्पोर (फंगस) उपलब्ध है जो उपयुक्त वातावरण के मिलते ही अन्य प्रजातियों को भी रोग ग्रस्त कर सकते हैं।

लाल सड़न रोग के आने से पहले ही निम्न कार्य करना लाभप्रद है क्योंकि लाल सड़न के नियंत्रण हेतु कोई दवा विकसित अभी तक नहीं हुई है।

- खेत की तैयारी के समय 10 किग्रा/एकड़ ब्लीचिंग पाउडर को रेत में मिलाकर प्रयोग करें तथा गहरी जुताई करें।
- खेत की सिंचाई के बाद नमी की दशा में 2-3 किग्रा ट्राईकोडर्मा के तैयार कल्चर को बुरकाव कर जुताई कराएँ।
- बुवाई हेतु बीज का चुनाव केवल स्वस्थ खेत/नर्सरी से ही करें।
- बुवाई में बीज का उपचार एजोक्सीस्ट्राविन + डायफिनाकाजोल (अजोल /टेण्डर/ गोडिवा सुपर आदि) से करना न भूलें।
- बुवाई के 70 दिनों बाद सूडोमोनाज 02 ली०/एकड़ का प्रयोग सिंचाई के साथ करें तथा अगली सिंचाई पर ट्राईकोडर्मा 02 ली०/एकड़ को प्रयोग अवश्य करें।
- टेण्डर/ अजोल 200 मिली/एकड़ का छिड़काव 90 दिनों बाद अवश्य कराएँ।
- फसल की किसी भी अवस्था में कटारी या बुवाई के 60 -70 दिनों के पश्चात N P K Consortium 01 ली०/एकड़ का प्रयोग सिंचाई के साथ करना न भूलें।

साभार ; डॉ. बी. एस. तोमर

Update from the Social Media:

चोटी बेधक कीट से बचाने हेतु उपाय

तापमान में वृद्धि के कारण कुछ चीनी मिल क्षेत्रों में चोटी बेधक कीट की दूसरी पीढ़ी का प्रकोप देखा जा रहा है। कीट का प्रकोप होने पर गन्ने की गोल्फ की पत्तियों पर गोल छर्रे जैसा निशान दिखाई पड़ता है। कीट की सूढ़ी हल्के पीले रंग की होती है तथा कीट की मादा गन्ने की पत्तियों की निचली सतह पर झुंडों में अंडे देती है जो नारंगी रंग के रोंयें से ढके होते हैं। कीट की तितली चांदी जैसे सफ़ेद रंग की होती है। कीट के अंड समूहों को पत्ती समेत तोड़कर नष्ट कर दें जिससे अंडे से सूढ़ी ही न बन पाये। इस कीट की सूढ़ी अवस्था ही अधिक हानिकारक



होती है। सूड़ी से प्रभावित पौधों को जमीन की सतह से काटकर निकाल दें। फेरोमोन या लाइट ट्रैप लगाकर तितली को नष्ट किया जा सकता है। ट्राइकोडर्मा जपोनिकम अंड परजीवी के 20 हजार अंडे प्रति एकड़ की दर से प्रत्यारोपित कर कीट के अंड समूहों को नष्ट किया जा सकता है। ट्राइकोडर्मा, गन्ना शोध संस्थान के शाहजहांपुर, सेवरही एवं मुजफ्फरनगर केंद्र पर उपलब्ध है।

कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु कॉलेंट्रीप्रोल 18.5 SC की 150 ml को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से सूखे खेत में गन्ने की लाइनों में जड़ों के पास ड्रैचिंग करें तथा 24 घंटे के अंदर सिंचाई करें। रोलेंटरी रीप्रोल बाजार में कोराजन सिटीजन आदि विभिन्न ट्रेड नामों से उपलब्ध है। गन्ना शोध संस्थान शाहजहांपुर द्वारा कृषक हित में जारी अधिक जानकारी हेतु 6389025312 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

Knowledge Box

The Many Names of Sugar: Most packaged food contains sugar, and even if you are reading the label, it might be hiding in plain sight. There are over 60 different names for sugar listed on food labels, and if the added sugar is split in different forms, the individual ingredients would sit lower in the ingredients list and give you the impression that the product has less sugar than it actually does. Some names that added sugar might be masquerading under:

High fructose	Castor sugar	Invert sugar	Corn syrup solids
Corn syrup	Coconut sugar	Maple syrup	Dextrin
(HFCS)	Confectioner's sugar (Powdered sugar)	Muscovado sugar	Dextrose
Agave nectar	Date sugar	Panela sugar	Diastatic malt
Beet sugar	Demerara sugar	Rapadura	Ethyl maltol
Blackstrap	Florida crystals	Raw sugar	Glucose
Molasses	Fruit juice	Refiner's syrup	Glucose solids
Buttered syrup	Concentrate	Sorghum syrup	Lactose
Cane juice	Golden sugar	Sucanat	Malt syrup
Crystals	Golden syrup	Treacle sugar	Maltodextrin
Cane sugar	Grape sugar	Turbinado sugar	Maltose
Brown sugar	Honey	Yellow sugar	Rice syrup
Caramel	Icing sugar	Barley malt	
Carob syrup		Brown rice sugar	

Sugar Shots

When you choose natural sugar sources, you'll often find that they also include beneficial elements. Natural sugars are found in dairy products, fruits, and vegetables can be enjoyed without causing dangerous sugar spikes.

Did You Know!

Antioxidants in sugarcane support immune system development and the prevention of infections. It is excellent for dehydration because of its high calcium, magnesium, iron and other electrolytes. It treats several illnesses, including the common cold and reduce fever by raising the body's protein levels.

Quiz No. 6

Name the Products and By-products of sugar industry?

Answer will be shared in next issue of UPSMA Newsletter

Answer of Quiz No. 5

Ques. What products are made from Sugar Cane?

- A. Rum B. Molasses C. Sweetener
D. All of the above

Ans. D. (All of the above)

All of the above options, including rum, molasses, and sweetener, are made from sugar cane. Rum is a distilled alcoholic beverage that is produced from sugarcane byproducts, such as molasses. Molasses is a thick, dark syrup that is a byproduct of the sugar-making process. It is used as a sweetener and flavoring agent in various food products.

UPSMA Newsletter titled 'Varta' the Dialogue is providing information on sugar, sugar industry and sugar byproducts. We request you to share your thoughts and experience with us through write-ups, success stories, updates, photographs etc. We publish your creative in the next edition of this newsletter. You are requested to send your entries to be published in UPSMA newsletter through mail at upsma@upsma.org. The newsletter will be uploaded on UPSMA website.